21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण : संभावना और चुनौतियाँ

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

के

इतिहास सामाजिक विज्ञान संकाय

में

पी–एच॰ डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रारूप

शोध पर्यवेक्षक
प्रो0 संजय झा
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
एल0एन0एम0यू0, दरभंगा

शोधार्थी
पूजा कुमारी
वर्ग क्रमांक–12
विश्वविद्यालय क्रमांक – 2210048

शोध परियोजना प्रारूप

1. **शीर्षक : 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण : संभावना और चुनौतियाँ**

2. **प्रस्तावना शोध के मुद्दे :**

महिलायें भारत की कुल आबादी का आधा हिस्सा हैं। संभवतः राष्ट्र के विकास के कार्य में महिलाओ की भूमिका और योगदान को पूरी तरह और सही परिप्रेक्ष्य में रखकर राष्ट्र निर्माण के कार्य को समझा जा सकता हैं। समूची सभ्यता में व्यापक बदलाव के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में महिला सशक्तिकरण आन्दोलन 20 वी शताब्दी के आखिरी दशक का एक महत्वपूर्ण राजनितिक और सामाजिक विकास कहा जाना चाहिए। भारत जैसे देश में जहाँ लोकतान्त्रिक तरीके से काम करने की आजादी हैं या युं कहे की एक सशक्त परम्परा हैं। जनमत जीवंत हैं और आधी आबादी के कल्याण में रूचि लेने वाला एक बड़ा वर्ग विधमान हैं। महिला सशक्तिकरण की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 8 मार्च, 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस से मानी जाती हैं। फिर महिला सशक्तिकरण की पहल 1985 में महिला अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन नैरोबी में की गईं भारत सरकार ने समाज में लिंग आधारित भिन्नताओ को दूर करने के लिए एक महान निति 'महिला कल्याण नीति' 1953 में अपनाई। महिला सशक्तिकरण का राष्ट्रीय उद्देश्य महिलाओ की प्रगति और उनमे आत्मविश्वास का संचार करना हैं। महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत महिलाओं से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और कानूनी मुद्दों पर रूप से संवेदनशीलता और सरोकार व्यक्त किया जाता है। सशक्तिकरण की प्रक्रिया में समाज को पारंपरिक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण के प्रति जागरूक किया जाता है, जिसने महिलाओं की स्थिति को सदैव कमतर माना है। वैश्विक स्तर पर नारीवादी आंदोलनों और

यूएनडीपी आदि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने महिलाओं के सामाजिक समता, स्वतंत्रता और न्याय के राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। महिला सशक्तिकरण, भौतिक या आध्यात्मिक, शारिरिक या मानसिक, सभी स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।

महिला सशक्तिकरण की बात समाज में रह रहकर उठती रही है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ कुछ इस प्रकार लगाया जाता है कि जैसे महिलाओं को किसी वर्ग विशेषकर पुरूष वर्ग का सामना करने के लिए सुदृढ किया जा रहा है। भारतीय समाज में प्राचीनकाल से ही नारी को पुरूष के समान अधिकार प्रदान किये गये हैं। उसे अपने जीवन की गरिमा को सुरक्षित रखने और सम्मानित जीवन जीने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया। यहां तक कि शिक्षा और ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाओं को अपनी प्रतिभा को निखारने और मुखरित करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की गयी। महाभारत काल के पश्चात नारी की इस स्थिति में गिरावट आयी। उससे शिक्षा का मौलिक अधिकार छीन लिया गया। धीरे धीरे शूद्र गंवार, पशु और नारी को ताडने के समान स्तर पर रखने की स्थिति तक हम आ गये। जबकि शूद्र, गंवार पशु और नारी ये प्रताडना के नही अपितु ये तारन के अधिकारी है। इनका कल्याण होना चाहिए। जिसके लिए पुरूष समाज को विशेष रक्षोपाय करने चाहिए।

भारत की नारी सदा अपने पति में राम के दर्शन करती रही है। हमारे यह सांस्कृतिक मूल्य इस पतन की अवस्था में भी सुरक्षित रहे। मुस्लिम काल में हिंदू समाज के कई संप्रदायों ने महिलाओं को पर्दे में रखना आरंभ कर दिया। यह पर्दा प्रथा मुस्लिम समाज के आतंक से बचने के लिए जारी की गयी। जो आज तक कई स्थानों पर एक रूढ़ि बनकर हिंदू समाज के गले की फांसी बनी हुई है। अंग्रेजों के काल में भी यह

परंपरा यथावत बनी रही, अन्यथा प्राचीन भारतीय समाज में पर्दा प्रथा नही थी। आज समय करवट ले रहा है। दमन, दलन और उत्पीडन से मुक्त होकर नारी बाहर आ रही है। यह प्रसन्नता की बात है, किंतु फिर भी कुछ प्रश्न खड़े हैं। नारी के सम्मान के, नारी की मर्यादा के, नारी की गरिमा के और नारी सुलभ कुछ गुणों को बचाये रखने को लेकर। नारी की पूजा से देवता प्रसन्न होते हैं हमारे यहां ऐसा माना जाता है। जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवताओं का वास होता है। इसका अर्थ नारी की आरती उतारना नहीं है, अपितु इसका अर्थ है नारी सुलभ गुणों–यथा उसकी ममता, उसकी करूणा, उसकी दया, उसकी कोमलता का सम्मान करना। उसके इन गुणों को अपने जीवन में एक दैवीय देन के रूप में स्वीकार करना। जो लोग नारी को विषय भोग की वस्तु मानते हैं वो भूल जाते हैं कि नारी सबसे पहले मां है, यदि वह मां के रूप में हमें ना मिलती और हम पर अपने उपरोक्त गुणों की वर्षा ना करती तो क्या होता? हम ना होते और ना ही यह संसार होता। तब केवल शून्य होता। उस शून्य को भरने के लिए ईश्वर ने नारी को हमारे लिये सर्वप्रथम मां बनाया। मां अर्थात समझो कि उसने अपने ही रूप में उसे हमारे लिये बनाया। इसलिए मां को सर्वप्रथम पूजनीय देवी माना गया। मातृदेवो भवः का यही अर्थ है। आज नारी के इस सहज सुलभ गुण का सम्मान नही हो रहा है। नारी मां के रूप में उत्पीडिघ्त है। किंतु यदि थोड़ा सूक्ष्मता से देखा जाए तो आज वह मां बनना भी नही चाह रही है। पुरूष के लिए यह भोग्या बनकर रहना चाह रही है। इसीलिए परिवार जैसी पवित्र संस्था का आज पतन हो रहा है। उसे अपना यौवन, अपनी सुंदरता और अपनी विलासिता के लिए अपने मातृत्व से ऊपर नजर आ रही है। पुरूष के लिए वह भोग्या बनकर रहना चाहती है। खाओ, पिओ एवं मौज उड़ाओ की जिंदगी में मातृत्व को समाप्त कर वह अपने आदशों से खेल रही है। आज महिला

पुरूष के झगड़े अप्रत्याशित रूप से बढ़ रहे हैं। पुरूष ही नारी की हत्या नही कर रहा है अपितु नारी भी पति की हत्या या तो कर रही है या करवा रही है। निरे भौतिकवादी दृष्टिकोण का परिणाम है यह अवस्था।

मां नारी के रूप में जब मां बनती है तो वह हमारे जीवन का आध्यात्मिक पक्ष बन जाती है जबकि पिता भौतिक पक्ष बनता है। जीवन इन दोनों से ही चलता है। हमारे शरीर में आत्मा मां का आध्यात्मिक स्वरूप है और यह शरीर पिता का साक्षात भौतिक स्वरूप। अध्यात्म से शून्य भौतिकवाद विनाश का कारण होता है और भौतिकवाद से शून्य अध्यात्म भी नीरसता को जन्म देता है। नारी को चाहिए कि वह समानता का स्तर पाने के लिए संघर्ष अवश्य करें किंतु अपनी स्वाभाविक लज्जा का ध्यान रखते हुए। निर्लज्ज और निर्वस्त्र होकर वह धन कमा सकती है किंतु सम्मान को प्राप्त नही कर सकती है। भौतिकवादी चकाचौंध में निर्वस्त्र घूमती नारी, अंग प्रदर्शन कर अपने लिए तालियां बटोरने वाली नारी को यह भ्रांति हो सकती है कि उसे सम्मान मिल रहा है, किन्तु स्मरण रहे कि यह तालियां बजना, उसका सम्मान नही अपितु अपमान है क्योंकि जब पुरूष समाज उसके लिए तालियां बजाता है तब वह उसे अपनी भोग्या और मनोरंजन का साधन समझकर ही ऐसा करता है। जिसे सम्मान कहना स्वयं सम्मान का भी अपमान करना है।

हमें दूरस्थ गांवों में रहने वाली महिलाओं के जीवन स्तर पर भी ध्यान देना होगा। महिला आयोग देश में सक्रिय है। किंतु यह आयोग कुछ शहरी महिलाओं के लिए है। यह आयोग तब तक निरर्थक है जब तक यह स्वयं ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए ग्रामीण आंचल में जाकर कार्य करने में अक्षम है। नारी सशक्तिकरण का अर्थ है नारी का शिक्षाकरण। शिक्षा से आज भी ग्रामीण अंचल में नारी 90 प्रतिशत तक अछूती है। उसे शिक्षित करना देश को विकास के रास्ते पर डालना है। इससे नारी वर्तमान के साथ जुड़ेगी। नारी सशक्तिकरण का यही

अंतिम ध्येय है। नारी के बिना पुरूष की परिकल्पना भी नही की जा सकती। ईश्वर ने नारी को सहज और सरल बनाया है, कोमल बनाया है। उसे क्रूर नहीं बनाया। निर्माण के लिए सहज, सरल, और कोमल स्वभाव आवश्यक है। विध्वंश के लिए क्रूरता आवश्यक है। रानी लक्ष्मीबाई हों या अन्य कोई वीरांगना, अपनी सहनशक्ति की सीमाओं को टूटते देखकर ही और किन्ही अन्य कारणों से स्वयं को अरक्षित अनुभव करके ही क्रोध की ज्वाला पर चढ़ी। यहां तक कि इंदिरा गांधी भी नारी के सहज स्वभाव से परे नही थी। सिंडिकेट से भयभीत इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल की घोषणा कर दी। अन्यथा इंदिरा केवल एक नारी थी। वही नारी जो अपनी हार पर (1977 में) अपनी सहेली पुपुल जयकर के कंधे पर सिर रखकर रोने लगी थी। यह उसकी कोमलता थी। मातृत्व शक्ति का गुण था।

नारी को अपने मातृत्व पर ध्यान देना चाहिए। वह पुरूष की प्रतिद्वन्द्वी नही है। अपितु वह पुरूष की सहयोगी और पूरक है। पुरूष को भी इस सत्य को स्वीकार करना चाहिए। गृहस्थ इसी भाव से चलता है। नारी अबला है। अपनी कोमलता के कारण, अपने मातृत्व के कारण उसके भीतर उतना बल नही है जितना पुरूष के भीतर होता है। इसलिए पहले पिता पति और वृद्धावस्था में उसका पुत्र उसका रक्षक है। वह घर की चारदीवारी से बाहर निकले यह अच्छी बात है, उसकी स्वतंत्रता का तकाजा है। किंतु यह स्वतंत्रता उसकी लज्जा की सीमा से बाहर उसे उच्छृंखल बनाती चली जाए तो यह उचित नही है। इसी से वह हठीली और दुराग्रही बनती है। जिससे गृहस्थ में आग लगती है और मामले न्यायालयों तक जाते हैं। समाज की वर्तमान दुर्दशा से निकलने के लिए नारी और पुरुष दोनों को ही अपनी अपनी सीमाओं का रेखांकन करना होगा तभी हम स्वस्थ समाज की संरचना कर पाएंगे।

३ण पूर्व अध्ययन साहित्यिक सर्वेक्षण :

21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण तथा उससे जुड़े विषयों को विस्तृत रूप से जानने का प्रयास किया गया है। इसने देश को सामाजिक रूप से काफी प्रभावित किया। 21वीं सदी के महिला संबंधित विभिन्न रचनाओं, लेखों, साहित्यों, पत्र–पत्रिकाओं एवं सरकारी दस्तावेजों से इसके विषय में जानकारी मिलेगी। राजेन्द्र यादव तथा अर्चना वर्मा द्वारा संपादित पुस्तक अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, राजेन्द्र यादव की रचना आदमी की निगाह में औरत, राजकिशोर की रचना अश्लीलता का हमला, अरविन्द जैन की पुस्तक उत्तराधिकार बनाम पुत्राधिकार, अरविन्द जैन की पुस्तक औरत होने की सजा, सुमन कृष्णकांत संपादित पुस्तक इक्कीसवीं सदी की ओर, प्रमिला कपूर की पुस्तक कामकाजी भारतीय नारी आदि से 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण की क्या संभावनायें हैं तथा उसके समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं।

4ण उद्देश्य महत्व एवं प्रासंगिकता :

भारत में 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण आन्दोलन ने महिलाओं के चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में इसे व्यापकता के आधार पर अध्ययन करने की आवश्यकता है। यह शोध प्रबंध एक छोटा सा प्रयास है। इसका महत्व एवं प्रासंगिकता वर्तमान महिला आन्दोलन के लिये काफी प्रासंगिक रहेगा। इसमें महिला आन्दोलन के सभी सोपानों का अध्ययन किया जायेगा।

5ण ज्ञान के क्षेत्रा में योगदान :

इस शोध के माध्यम से 21वीं सदी में हुये महिला सशक्तिकरण से संबंधित घटनाक्रमों से जुड़े विविध पक्षों जैसे–बालिका भ्रूण हत्या, दहेज विरोधी आन्दोलन, तीन तलाक आदि ने किस प्रकार देश की सामाजिक,

राजनीतिक एवं आर्थिक विकास को प्रभावित किया। यह इस शोध के सार के रूप में सामने आयेगा। देश के लोगों का बड़ी संख्या में इन संगठनों से जुड़ने के कारण राष्ट्रीयता के साथ–साथ बहुत से सकारात्मक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विचारों का उदय निश्चित रूप से राष्ट्र की सबलता के प्रति अहम जागृति के रूप में सामने आने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

6ण **अध्ययन क्षेत्रा :**

21वीं सदी में देश में महिला आन्दोलनों की दशा एवं दिशा को व्यापक रूप से देखना इसकी विशिष्टता का परिचायक है। यद्यपि इस पर पूर्व में भी कार्य हुये हैं लेकिन इसके विविध पक्षों का अध्ययन करना अभी बाकी है। इस संदर्भ में 21वीं सदी में महिला आन्दोलन की संभावना तथा चुनौतियाँ यही इसका अध्ययन क्षेत्र है।

7ण **अध्ययन प(ति :**

21वीं सदी में महिला आन्दोलन की दशा एवं दिशा के विकास के विविध पक्षों को एक साथ देखने का जो प्रयास इस शोध के माध्यम से किया जा रहा है। यह निश्चित रूप से देश के विकास के अति महत्वपूर्ण तथा अनसुलझे पक्षों को उजागर करने का काम है। इससे लोगों के विभिन्न महिला आन्दोलनों में भाग लेने, इससे विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव की जानकारी हमें अभिलेखागारीय एवं अन्य प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त होती है।

8ण **शोध सामग्री की उपलब्धता :**

प्रस्तुत शोध के विषय पर्याप्त मात्रा में हैं परन्तु बिखरे हुये हैं। इन्हें संकलित कर शोध हेतु सामग्री बनाने में विभिन्न संस्थाओं, ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाओं को माध्यम बनाया गया है। बिहार राज्य अभिलेखागार,

पटना, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा आदि में पर्याप्त मात्रा में रिकॉर्ड्स उपलब्ध हैं जिसका उपयोग शोध में होना सुनिश्चित है।

9ण परिकल्पना ;यदि कोई होद्ध :

यह शोध एक छोटी परन्तु महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। इसके द्वारा 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरण के चुनौतियाँ एवं संभावनायें, उसकी दशा–दिशा में इसके विस्तार विविध प्रभावों के अनसुलझे पक्षों को इस शोध से जानने में मदद मिलेगी।

10ण कार्य योजना :

प्रस्तावित शोध कार्य को निम्नलिखित अध्यायों के अन्तर्गत सम्पन्न किया जायेगा–

प्रथम अध्याय – प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय – महिलाओं की स्थिति

तृतीय अध्याय – महिला सशक्तिकरण

चतुर्थ अध्याय – महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति

पंचम अध्याय – भारतीय महिलायें एवं मानवाधिकार

षष्ठ अध्याय – महिला सशक्तिकरण के प्रयास

सप्तम अध्याय – निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

11 संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, सं. राजेन्द्र यादव एवं अर्चना वर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, 2001
2. आधी ज़मीन, उपेन्द्र नाथ अश्क, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997

3. आदमी की निगाह में औरत, राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, 2001
4. अश्लीलता का हमला, राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998
5. उठो अन्नपूर्णा साथ चलें, उषा महाजन, हिमाचल पुस्तक भंडार, दिल्ली, 1998
6. उत्तराधिकार बनाम पुत्राधिकार, अरविन्द जैन, राजकमल पेपर बैक्स, 2001
7. उत्तर आधुनिक परिदृश्य, सुधीश पचौरी, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
8. औरत होने की सजा, अरविन्द जैन, राजकमल पेपर वैक्स सं.,नई दिल्ली, 1999
9. औरत : अस्तित्व और अस्मिता, अरविन्द जैन, सारांश प्रकाशन, दिल्ली, 2000
10. औरत के लिए औरत, नासिरा शर्मा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
11. इक्कीसवीं सदी की ओर, सं. सुमन कृष्णकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
12. श्रृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995
13. कामकाजी भारतीय नारी, डॉ. प्रमिला कपूर, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1976
14. क्रान्ति का विचार और हिन्दी उपन्यास, प्रेम सिंह, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, राष्ट्रपति निवास, शिमला, 2000
15. कार्यशील महिलाएँ एवं सामाजिक परिवर्तन, मंजू जैन, प्रिंटवेल प्रकाशन, जयपुर

16. कमलेश्वर, सम्पा. मधुकर सिंह, शब्दकार प्रकाशन, 1977
17. चुकते नहीं सवाल, मृदुला गर्ग, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
18. जोधपुर राज्य का इतिहास–2, जी.एच. ओझा
19. नारी प्रश्न, सरला महेश्वरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998
20. न्याय क्षेत्रे : अन्याय क्षेत्रे, अरविन्द जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, 2002

शोध पर्यवेक्षक
प्रो0 संजय झा
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
एल0एन0एम0यू0, दरभंगा

शोधार्थी का हस्ताक्षर
पूजा कुमारी